सौंफ की उन्नत खेती
कृषि कुंभ (जुलाई 2023),
खण्ड 03 भाग 02, पृष्ठ संख्या 86–88

सौंफ की उन्नत खेती

जी. आर. चौधरी, अजीत सिहं, यासिर अजीज तंबोली एवं वैशाली चतुर्वेदी
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर–302017, राजस्थान, भारत।
Email Id: ajitbhu89@gmail.com

सौंफ

उत्तरी भारत के मुख्य रूप से राजस्थान एवं गुजरात में इसकी खेती एक वर्षीय रबी की फसल के रूप में की जाती है। सौंफ की उपयोगिता इसमें पाये जाने वाले खुशबुदार वाष्पशील तेल के कारण है। रूचिकर गंध व स्वाद के कारण सौंफ के दाने साबुत या पीसकर सूप, आचार, मांस, चाकलेट, सॉस आदि कई भोज्य पदार्थों में डाले जाते हैं। सौंफ में पाचक व वायुनाशक गुण पाया जाता है।

जलवायु

सौंफ शरद ऋतु में बोई जाने वाली फसल है इसके लिए शुष्क एवं सामान्य ठण्डा मौसम विशेषकर जनवरी से मार्च तक इसकी उपज व गुणवत्ता के लिये लाभदायक रहता है। फूल आते समय लम्बे समय तक अधिक बादल या अधिक नमी से बीमारियों के प्रकोप को बढ़ावा मिलता है।

भूमि एवं खेत की तैयारी

सौंफ की अच्छी पैदावार के लिये जल निकास की सुविधा वाली दुमट व काली मिट्टी श्रेष्ठ रहती है। बलुई मिट्टी को छोड़कर प्रायः सभी प्रकार की भूमि में, जिसमें जीवांश पर्याप्त मात्रा में हो, सौंफ की खेती की जा सकती है। भारी एवं चिकनी मिट्टी की अपेक्षा दुमट मिट्टी अधिक अच्छी रहती है। जुताई कर 15–20 सेमी गहराई तक खेत की मिट्टी को मुलायम करके भुरभुरी बना लेना चाहिए। जुताई के बाद पाटा चलाकर खेत को समतल करके सिंचाई की सुविधानुसार क्यारियां बनानी चाहिए।

उन्नत किस्में

आर.एफ.–101, आर.एफ.–125, आर.एफ.–143, आर.एफ.–145, आर.एफ.–178, आर.एफ.–205, पी.एफ.–35, जी.एफ.–2, जी.एफ.–1, को.–1, हिसार स्वरूप, आजाद सौंफ–1 एवं पन्त मधुरिका।

खाद एवं उर्वरक

गोबर की खाद 10–15 टन प्रति हैक्टेयर के हिसाब से खेत की तैयारी से पहले अच्छी तरह से मिला देवें। इसके अलावा 90 कि.ग्रा. नत्रजन एवं 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस प्रति हैक्टेयर की दर से देना चाहिये। 30 कि.ग्रा. नत्रजन एवं फॉस्फोरस की पूरी मात्रा खेत की अन्तिम जुताई के साथ डालें। 60 कि.ग्रा. नत्रजन को दो भागों में बांटकर 30 कि.ग्रा. बुवाई के 45 दिन बाद एवं शेष 30 कि.ग्रा. फूल आने के समय फसल में सिंचाई के साथ देवें।

बीज की मात्रा एवं बीजोपचार

अच्छी किस्म के 8–10 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टेयर के हिसाब से लेकर बाविस्टीन दवा 2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।

बुवाई का तरीका एवं समय

बुवाई अधिकतर छिटकवा विधि से की जाती है एवं निर्धारित बीज की मात्रा एक समान छिड़ककर हल्की दंताली चलाकर या हाथ से मिट्टी में मिला देते हैं। सौंफ बुवाई रोपण विधि द्वारा या सीधे कतारों में भी की जाती है। सीधी बुवाई के लिये 8–10 कि.ग्रा. बीज एवं रोपण विधि में 3 से 4 कि. ग्रा. बीज की प्रति हैक्टेयर आवश्यकता होती है। रोपण विधि से बुवाई के लिए जून–जुलाई के महीने में 100 वर्ग मीटर क्षेत्र में पौध लगाई जाती है तथा अगस्त–सितम्बर के महीने में रोपण किया जाता है। सीधी बुवाई मध्य सितम्बर से मध्य अक्टूबर तक की जाती है। बुवाई 40 से 50 सेंमी के फासले पर कतारों में करें। रोपण दोपहर बाद जब गर्मी कम हों, करें तथा रोपण के बाद तुरन्त सिंचाई करें। सीधी बुवाई में, बुवाई के 7–8 दिन बाद दूसरी हल्की सिंचाई करें जिससे अंकुरण पूर्ण हो जावे।

सिंचाई

बुवाई के तुरन्त बाद सिंचाई करें, जिससे बीज जम जाये। दूसरी सिंचाई बुवाई के 12 से 15 दिन बाद करनी चाहिए, जिससे बीजों का अंकुरण पूर्ण हो जावे। इसके बाद आवश्यकतानुसार 20–25 दिन के अन्तर पर सिंचाई करनी चाहिये। फूल आने के बाद एवं दाने बनते समय फसल को पानी की कमी नहीं होनी चाहिये।

खरपतवार नियन्त्रण

पहली निराई गुड़ाई बुवाई के 30 दिन बाद करें। दूसरी एवं तीसरी निराई गुड़ाई आवश्यकतानुसार करें। गुड़ाई करते समय जहां पौधे अधिक हों वहां से कमजोर पौधों को निकालकर पौधे से पौधे की दूरी 20 सेमी कर देवें जिससे बढ़वार अच्छी हो इसके बाद समय–समय पर आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहें। फूल आने के समय पौधों पर हल्की मिट्टी चढ़ा देवें। पेन्डामिथालीन 1.0 किलो सक्रिय तत्व (3.33 लीटर स्टाम्प एफ–34) प्रति हैक्टेयर (4.50 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) 750 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के एक दो दिन बाद छिड़काव करके भी खरपतवार नियन्त्रण कर सकते हैं।

प्रमुख कीट, रोग एवं रोकथाम

मोयला, पर्णजीवी (थ्रिप्स) एवं मकड़ी :–

मोयला पौधे के कोमल भाग से रस चूसता है तथा फसल को काफी नुकसान पहुंचाता है। थ्रिप्स कीट बहुत छोटे आकार का होता है तथा कोमल एवं नई पत्तियों से हरा पदार्थ खुरचकर खाता है जिससे पत्तियों पर धब्बे दिखाई देने लगते हैं तथा पत्ते पीले होकर सूख जाते हैं। मकडी छोटे आकार का कीट है जो पत्तियों पर घूमता रहता है व रस चूसता है जिससे पौधा पीला पड जाता है।

इन कीटों के नियन्त्रण हेतु डाईमिथोएट 30 ई. सी. 500 मि. ली. या मैलाथियान 50 ई. सी. 500 मि. ली. या एण्डोसल्फॉन 35 ई. सी. 600 मि. ली. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से छिड़कना चाहिए। आवश्यकतानुसार छिड़काव 15 से 20 दिन बाद दोहरायें।

झुलसा (रूमुलेरिया ब्लाईट) :–

यह रोग *रूमुलेरिया फोइनेकुलाई* नामक फफूंद द्वारा होता है। यह रोग बुवाई के 60–70 दिन बाद पुरानी पत्तियों की निचली सतहों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं रोग की शुरू की अवस्था में राख के समान छोटे धब्बे पत्तियों की निचली

सतहों पर दिखाई देते हैं जो उग्र अवस्था में बडे हो जाते हैं और बाद में सफेद उठी हुई वृद्धि के रूप में दिखाई देते हैं। धीरे–धीरे रोग तने व फलों पर भी फैल जाता है।

इस रोग के नियन्त्रण हेतु बाविस्टीन 0.1 प्रतिशत या मेन्कोजेब 0.2 प्रतिशत या ताम्रयुक्त कवकनाशी 0.3 प्रतिशत का घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करे। आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर दोहरावें।

झुलसा (आल्टरनेरिया ब्लाईट)

यह रोग *आल्टरनेरिया टेनुईस* नामक फफूंद द्वारा होता है। आल्टरनेरिया द्वारा आक्रमण मुख्यतः पुष्पक्रम पर होता है पत्तियों के सिरे तथा पुष्पक्रम झुके हुए तथा झुलसे दिखाई देते हैं।

इस रोग के नियन्त्रण हेतु मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से फसल पर छिड़काव करें।

छाछ्या (पाउडरी मिल्ड्यू)

यह रोग *ईरीसाईफी पोलीगोनी* नामक फफूंद द्वारा होता है। रोग का प्रकोप फरवरी से मार्च के महीनों में अधिक रहता है। इस रोग के लगने पर शुरू में पत्तियों एवं टहनियों पर सफेद चूर्ण दिखाई देता है जो बाद में सम्पूर्ण पौधे पर फैल जाता है।

छाछ्या के नियन्त्रण हेतु 20 से 25 किलोग्राम गंधक के चूर्ण का भुरकाव प्रति हैक्टेयर करना चाहिए या कैराथियान एल सी 1 मिलीलिटर प्रति लीटर पानी के घोल बनाकर छिड़कना चाहिए। आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव दोहरावें।

जड़ व तना गलन (रूट व स्टेम रोट) :–

यह रोग *स्केलेरोटीनिया स्कलेरोशियम* नामक फफूंद द्वारा होता है। इस रोग के प्रकोप से तना नीचे से मुलायम हो जाता है व जड़ गल जाती है। जड़ों पर छोटे बड़े काले रंग के स्कलेरोशिया दिखाई देते हैं।

इस रोग के नियन्त्रण हेतु बुवाई से पूर्व बीज को बॉवस्टीन 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करनी चाहिए।

गोंदिया (गमोसिस) :–

यह एक पादप कार्यिकी विकार है। इस विकार में पौधों के फूलों द्वारा चीनी की चाशनी जैसा द्रव छोड़ा जाता है जो बाहर से फफूंदों एवं चैपा (मोल्ड) को आकर्षित करता है जिसकी वजह से पौधा काला एवं गूंदिया नजर आता है।

रोग ग्रस्त खेतों में सिंचाई एवं खाद देना बंद कर देना चाहिए। डाइमिथोएट 0. 03 प्रतिशत या फास्फोमिडान 0.05 प्रतिशत का छिड़काव करें।

उपज :–

इसकी अच्छी तरह से खेती की जावे तो 15–20 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक पूर्ण विकसित एवं हरे दाने वाली सौंफ की उपज प्राप्त की जा सकती है। साधारणतया 7–10 क्विंटल प्रति हैक्टर महीन किस्म की सौंफ आसानी से पैदा की जा सकती है।